ग्रन्थमाला ‘धर्माचरण’ : खण्ड ४

धार्मिक उत्सव एवं व्रतों का अध्यात्मशास्त्रीय आधार

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

एवं पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४५, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९९, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ५४, तमिल ४४, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

सितम्बर २०२४ तक ३६६ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९७ लाख ५९ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्यका संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था' की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से २०.९.२०२४ तक १२८ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४३ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. देवता, साधना, राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-संपादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) स्थापनाका उद्घोष (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तरपर दिशादर्शन !

७. भारतीय संस्कृतिके वैश्विक प्रसार हेतु 'भारत गौरव पुरस्कार' देकर फ्रान्स के संसदमें सम्मान (५ जून २०२४)

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशीजीका परिचय

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

अध्याय १. वर्षान्तर्गत प्रमुख त्योहार, धार्मिक उत्सव एवं व्रत ८

अध्याय २. धार्मिक उत्सव

१. व्याख्या १४

२. उद्देश्य १४

३. इतिहास १६

४. कुछ प्रमुख धार्मिक उत्सव १६

४ अ. श्रीराम नवमी — ४ आ. हनुमान जयन्ती १६

४ इ. वटसावित्री — ४ ई. गुरुपूर्णिमा १८

४ उ. पोला (बेंदुर अथवा बेंडर) — ४ ऊ. मंगलागौरी २०

४ ए. जन्माष्टमी २१

४ ऐ. श्री गणेश चतुर्थी (श्री गणेशोत्सव) २५

४ ओ. नवरात्रि — ४ औ. दुर्गाष्टमी २५

४ अं. दशहरा (विजयादशमी) २७

४ क. कोजागरी पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) २७

४ ख. लक्ष्मीपूजन (दिवाली) २८
४ ग. शाकंभरी पूर्णिमा २९
४ घ. वसंत पंचमी २९
४ च. होली २९
४ छ. धूलिवन्दन ४ ज. रंगपंचमी ३४

अध्याय ३. व्रत

१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ २. इतिहास एवं निर्मिति ३६
३. व्रतसंख्या ३७
४. ग्रन्थ ५. महत्त्व एवं लाभ ३८
६. प्रकार ४१
७. व्रतीद्वारा पालन हेतु नियम (व्रतपरिभाषा) ४४
८. व्रताधिकारी ४८
९. कौनसे व्रत किसलिए ? ४९
१०. उपवाससम्बन्धी व्रत ४९
११. पूर्वतैयारी ४९
१२. व्रतविधान ५२
१३. प्रतिनिधि ५३
१४. व्रतका फल किसपर निर्भर होता है ? ५४
१५. स्त्रियां एवं व्रत ५५
१६. रोग एवं व्रत ५६
१७. कुछ प्रमुख व्रत ५६

卐 **'व्रत'सम्बन्धी आलोचनाएं एवं उनका खण्डन** ८१

भूमिका

'धार्मिक उत्सव और व्रत', हिन्दुओंके धर्मजीवनके अविभाज्य अंग हैं । मनुष्य स्वभावतः उत्सवप्रिय होता है । इसलिए, हिन्दूजन देवताओंकी जन्मतिथि सन्तोंकी पुण्यतिथिके साथ ही, कोजागरी पूर्णिमा, दीपावली, होली आदि त्योहार मिल-जुलकर पूरे उत्साहके साथ मनाते हैं । ऐसे धार्मिक उत्सवोंसे उनकी समाजाभिमुखता बढती है और सामाजिक एकता दृढ होती है; परन्तु इस सबके साथ यह देखना आवश्यक होता है कि इन धार्मिक उत्सवोंसे समाजको आध्यात्मिक स्तरपर लाभ मिल रहा है अथवा नहीं; क्योंकि, यही उत्सव मनानेका मूल उद्देश्य है । इसके लिए धर्मशास्त्रका ज्ञान प्राप्त करना और वर्तमानमें धार्मिक उत्सवोंको प्राप्त विकृत रूप परिवर्तित कर धर्मशास्त्रानुसार उत्सव मनाना, यह 'हिन्दू'के रूपमें हमारा कर्तव्य है । इस दृष्टिसे विविध धार्मिक उत्सव मनानेकी धर्मशास्त्रीय पद्धतियां इस ग्रन्थमें दी हैं।

मनुष्यका जीवन संयमित और सुखी बनानेके लिए उपयुक्त व्रत हिन्दू धर्ममें बताए गए हैं । इन व्रतोंके पीछे ऋषि-मुनियोंका संकल्प भी है, इसलिए इनका श्रद्धापूर्वक पालन करनेवालोंको व्रतोंका इष्ट फल मिलता है । इस ग्रन्थमें व्रत करनेकी शास्त्रीय पद्धतियोंका विवेचन दिया हैं ।

'ग्रन्थ पढकर पाठकोंको उत्सव एवं व्रतों से जीवनमें मांगल्य अनुभव हो', यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना ! - **संकलनकर्ता**

टिप्पणी - वर्षके प्रमुख त्योहार, धार्मिक उत्सव एवं व्रतों की सूची, सनातन के ग्रन्थ 'उत्सव मनानेकी उचित पद्धतियां एवं अध्यात्मशास्त्र'में दी है ।

प्रस्तुत ग्रन्थमें दिए धार्मिक कृत्य ऋग्वेदीय धर्मग्रन्थानुसार हैं !

प्रस्तुत ग्रन्थमें दिए धार्मिक कृत्य विशेषतः ऋग्वेदीय धर्मग्रन्थानुसार हैं । विविध प्रान्तोंमें अन्य वेदोंके धर्मग्रन्थोंके अनुसार धार्मिक कृत्य प्रचलित हो सकते हैं । ऐसा होते हुए भी प्रस्तुत ग्रन्थानुसार आचरण करनेवाले व्यक्तिको धर्मशास्त्रके अनुसार उसका फल अवश्य मिलेगा । अतः पाठक प्रस्तुत ग्रन्थानुसार अथवा अपने-अपने प्रान्तानुसार धार्मिक कृत्य करें ।